Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 5 | ISSN : 2582-0095

स्वातन्त्र्योत्तर काल में रामकथामूलक प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार जानकीचरितामृतम् महाकाव्य–रामसनेहीदास

संगीता जायसवाल
शोध छात्रा, संस्कृत विभाग,
दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश– रामसनेहीदास ने जानकीचरितामृतम् माहाकाव्य के अतिरिक्त श्रीकिशोर मंगलम्, श्रीकिशोरी जी की अद्भुतलीला, महर्षिकार्तिकेयजीवनदर्शन, श्रीकिशोरी सुमंगलम् एवं श्रीसीतारामकृपाकटाक्षस्रोत जैसे भक्तिपरक ग्रन्थों की रचना की है। राम के इस व्यवहार के बाद सीता द्वारा जो भाषण कराया गया है, राम की आलोचना की गयी है। सप्तदश सर्ग का नाम 'जनापवादः तथा अष्टादश सर्ग का नाम 'अपवादनिर्णयः' है। उन्नीसवें सर्ग में लव–कुश के जन्म का वर्णन होने से 'लवकुशोदयः' कहा गया। विंश सर्ग में अश्वमेघ यज्ञ का वर्णन किया गया है।

मुख्यशब्द– रामसनेहीदास, जानकीचरितामृतम्, माहाकाव्य, साहित्य, संस्कृत, राम, यज्ञ।

20वीं शताब्दी के दशक में संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में ऐसे किसी प्रतिभाशाली सन्त का आविर्भात उत्तर प्रदेश के सीतापुर जनपद के अन्तर्गत गया प्रसाद के पुत्र के रूप में हुआ, जो सम्प्रति महात्मा रामसनेहीदास के नाम से जाने जाते हैं। रामसनेहीदास ने जानकीचरितामृतम् माहाकाव्य के अतिरिक्त श्रीकिशोर मंगलम्, श्रीकिशोरी जी की अद्भुतलीला, महर्षिकार्तिकेयजीवनदर्शन, श्रीकिशोरी सुमंगलम् एवं श्रीसीतारामकृपाकटाक्षस्रोत जैसे भक्तिपरक ग्रन्थों की रचना की है। इनमें श्री किशोरी सुमंगलम् तथा श्रीसीतारामकृपाकटाक्षस्रोत संस्कृत में प्रणीत लघु काव्य है तथा अन्य हिन्दी गद्य में लिखित है, जिनका वर्ण्य विषय उनके शीर्षक से ही स्पष्ट है।

रामसनेहीदास विरचित जानकीचरितामृतम् काव्य सन् 1957 ई० में प्रकाशित हुआ। इसमें परत्परब्रह्म श्रीराम एवं सर्वेश्वरी सीता के अपने साके धाम से जीवनों के कल्याणार्थ अयोध्या नरेश दशरथ एवं कौसल्या तथा मिथिला नरेश सीरध्वज जनक एवं सुनयना के यहाँ अवतार लेने से लेकर उनके विवाहित होकर अयोध्या में सौभाग्य रात्रि की कथावस्तु का एक सौ छः अध्याय में प्रमुख से वर्णन किया गया है तथा एक सौ सातवें अध्याय में संक्षिप्त रामकथा के रूप में कतिपय श्लोकों में उनके विवाहोपरान्त से लेकर लंका विजय करके पुनः अयोध्या

में आकर राजसिंहासनारूढ़ होने तक की कथा अत्यन्त संक्षेप में वर्णित है। जानकीचरितामृतम् महाकाव्य में कुल 108 अध्याय हैं। इसके एक सौ आठवें अध्याय में सम्पूर्ण ग्रन्थों के प्रत्येक अध्याय की विषय सूची वर्णित की गयी है।

श्रीरामकीर्तिमहाकाव्य– सत्यव्रशास्त्री

सत्यव्रतशास्त्री का जन्म लाहौर में सन् 1930 ई० में हुआ, जो इस समय पाकिस्तान का एक शहर है। इनके पिता का नाम चारूदेव शास्त्री था। इनकी रचना श्रीगुरुगोविन्दसिंहचरित (1967) के लिए 1968 ई० में इनको साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला तथा 2007 में इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। कविवर शास्त्री संस्कृत भाषा के विद्वान् एवं महत्वपूर्ण मनीषी रचनाकार हैं, इनके द्वारा रचित तीन महाकाव्य प्रकाश में आये– (1) बोधिसत्वचरित जो प्रथम बार 1960 में प्रकाशित हुआ। (2) इन्दिरागान्धीचरितम् जो मूलामूल सचदेव प्रतिष्ठान और अमरनाथ सचदेवा प्रतिष्ठान, बैंकाक द्वारा 1990 में प्रकाशित हुआ। तीनों महाकाव्यों में से प्रत्येक लगभग एक हजार श्लोक हैं।

मूल थाईदेश की रामायण पर आधारित श्रीरामकीर्तिमहाकाव्य में कुल 25 सर्ग हैं, कविवर शास्त्री ने अपने 'आत्मनिवेदन' में यह स्पष्ट कर दिया है कि इन्होंनें थाई–देशों में प्रचलित रामकीर्ति नाम की रामगाथा को उपजीव्य ग्रन्थ के रूप में लिया है तथा जो उपाख्यान श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण अथवा अन्य प्रसिद्ध भारतीय रामायणों में उपलब्ध नहीं होते, उन्हें विशेष रूप से लिया है, जिससे थाई–रामायण के राम का कथागत वैशिष्ट्य समुन्मिषित हो। इनका मत है कि 'रामकीर्ति' की रामगाथा उनके सूत्रमात्र हैं, उसे परिवर्ति न करते हुए उन्होंने अपनी शैली में अपना भी कुछ जोड़ा है। उनका कथन है कि रामायणकर्ता मुनिवर ऋषि वाल्मीकि ही थे। यही सत्य है। इसके पहले थाईजन जो कुछ भी तथ्य जानते रहे हों वह तथ्य सही नहीं।

श्रीरामकीर्तिमहाकाव्य के प्रथम सर्ग में पहले के पाँच पद्य कवि ने 'थाईदेशविलास' नामक अपनी रचना से उद्धृत किये हैं। नगर की राजधानी बैंकाक के इतिहास तथा रामकीर्ति के नाम से प्रसिद्ध रामगाथा के इतिवृत्त और उसके प्रति देशवासियों की आत्मीयता की चर्चा है। द्वितीय सर्ग 'अनोमत्तन्नुपाख्यानम्' में अनोमतन् नाम के आद्य नृपति के जन्म का वर्णन है। इस प्रसंग में हिरन्त यक्ष नाम के असुर का उपद्रव जो अनायास ही देवों को पीड़ित करता हुआ विशाल चक्रवाल गिरि पर निवास करता था, उससे पीड़ित देवताओं का प्रतिकार के लिए ईश्वर के पास जाना, ईश्वर द्वारा नारायण का स्मरण, हिरन्त यक्ष का नारायण द्वारा वध, तदन्तर क्षीरसागर पर पहुँचे नारायण द्वारा पद्म पर सो रहे एक शिशु का दर्शन, उसे ईश्वर को उपहृत करना, ईश्वर द्वारा उसका नाम अनोमतन् रखा जाना तथा आदेशित करना कि यह पृथ्वी का प्रथम राजा होगा, ईश्वर के आदेशानुसार महेन्द्र द्वारा अयोध्यापुरी का निवेशन, अनोमतन् से दशरथ और दशरथ से राम की उत्पत्ति का इत्तिवृत्तात्मक निर्देश किया गया है।

उत्तरसीताचरितम्– रेवाप्रसाद द्विवेदी

स्वातंत्रयोत्तर संस्कृत कविसमज्या के वरिष्ठ हस्ताक्षर, अकुण्ठ वैदुष्य के धनी महामहोपाध्याय आचार्य रेवा प्रसाद द्विवेदी का जन्म मध्य प्रदेश के सीहोर जनपद में स्थित नादनेर नामक उपनगर में 22 अगस्त, 1935 ई०

को हुआ। आपके पिता स्वर्गीय पं० नर्मदाप्रसाद दूबे अत्यन्त आचरणभूत धर्मनिष्ठ महापुरुष थे। आपका शैशव उतना सुखद नहीं रहा, कारण बाल्यकाल में ही इनकी माता का देहान्त हो गया। 1980 में इन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया और उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के राज्य सरकारों एवं संस्कृत अकादमियों ने भी इन्हें अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत किया है।

मौलिक कृतियाँ–

उत्तरसीताचरितकार डॉ० रेवा प्रसाद द्विवेदी की अधोलिखित मौलि कृतियाँ निम्न हैं–

महाकाव्य – उत्तरसीताचरितम्, स्वातंत्रयसम्भवम्

खण्डकाव्य – रेवाभद्रपीठम्, शतपत्रम्, प्रमयः, शया, सरसी, मालतिकामतान्तरम्, शरभंगम्, शाकटारः।

नाट्यकृतियाँ –यूथिका, सप्तर्षिकांग्रेसम्

कालिदासग्रन्थावली के सम्पादन से द्विवेदी जी को विद्वज्जगत में अक्षय कीर्ति मिली। आपने ध्वन्यालोक एवं व्यक्तिविवेक की विद्वत्तापूर्ण व्याख्याएँ लिखी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि डॉ० रेवा प्रसाद द्विवेदी बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न रचनाकार हैं।

स्वांतत्रयोत्तर संस्कृत साहित्य में रामकथामूलक रचित महाकाव्यों में डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित उत्तरसीताचरितम् का प्रमुख स्थान है।

उत्तरसीताचरितम् महाकाव्य में कुल दस सर्ग हैं। इसमें वनवास से आगमन के पश्चात् राम द्वारा सीता के निर्वासन की प्रसिद्ध घटना को आधार बनाया गया है। कवि ने मूल कथा में अपने अनुसार कुछ नवीन मोड़ दिया है। उत्तरसीताचरितम् की प्रमुख पात्र सीता करुणा की पात्र अबला नहीं है, क्योंकि कवि के अनुसार महामुनियों के शोणित से उसे ओजस् जेज की ज्योति प्राप्त हुई है।

सर्वसहा भगवती पृथ्वी से सीता को शरीररत्न, विदेह जनक से विनय योग प्राप्त हुआ है। बुद्धि प्रधान सूर्यवंश की कुलवधू होकर चौदह वर्षों तक वनवास द्वारा वह पतिव्रता की सुवर्णमुद्रा परिक्षित हो चुकी है तथा वह नितान्त उदार चित्त वाली नारी है। सीता के सम्बन्ध में यह श्लोक प्रसिद्ध है–

निमिकुलतपसां वा सत्फलं, पुण्यपाको
रविकुलजनुषां वा जानकीत्यार्यलक्ष्मीः।
व्यरूचदवनिपालस्यार्धमुद्रासनस्था
श्रितवपुरिव लोकस्योदयायौषसी श्रीः।।

सीता के सम्बन्ध में लोकापवाद के पीछे अपनी ही गलती मानते हुए राम उसे जनता में व्याप्त अशिक्षा को स्वीकार करते हैं। और कहते हैं कि बच्चा यदि विष खाता है तो वह दोष पिता का ही होता है और रोग यदि बढ़ता है तो उसमें निन्दा वैद्य की ही होती है।

जानकी परित्याग नामक तृतीय सर्ग में राम के द्वारा सीता को वन छोड़ दिये जाने के निर्णय देने पर राम–लक्ष्मण को सीता को वन में छोड़ आने का आदेश देते हैं। राजधर्म के पालन में तत्पर निष्काम राम ममत्व

का बंधन तोड़ देते हैं। चतुर्थ सर्ग में सीता द्वारा उर्मिला को स्वयं के वनेचरी वन जाने की सूचना सुनाने पर उर्मिला विचलित हो उठती है तथा सीता के साथ उनकी तीनों बहनें भी वन जाने के लिए तत्पर हो जाती है। किन्तु सीता अपने साथ वन चलने का उनके प्रस्ताव का अनुमोदन नहीं करती।

वाल्मीकि पंचम सर्ग में प्रकृति में हुए परिवर्तन का कारण जानने के लिए समाधि लगाते है। समाधि में वाल्मीकि वन में सीता को देखते हैं, जिसने वहाँ दो पुत्रों को जन्म दिया है। वाल्मीकि सीता के पास पहुँचकर उससे अपने आश्रम में चलने को कहते हैं, जानकी भी उनकी आज्ञा को शिरोधार्य करके उनके आश्रम की ओर चल देती है।

नवम सर्ग में वाल्मीकि के आश्रम में भरत, लक्ष्मण को लेकर गुरु वसिष्ठ के साथ सभी माताएँ एवं जनक पहुँच जाते हैं। वहाँ पर वाल्मीकि द्वारा यह कहे जाने पर कि क्या पत्नी के बिना राम का यज्ञ पूरा हो सकेगा? राम शोकमग्न हो जाते हैं। तब रामादि के शोक को देखकर वाल्मीकि ने यह जान लिया कि वे जो चाहते हैं वही सब चाह रहे हैं। तब वाल्मीकि सभी में सीता विरह–व्यथा का निरूपण हुआ है। सप्तम एवं अष्टम सर्ग में उर्मिला लक्ष्मण का चित्र बनाकर एवं गीत गाकर अपनी विरह व्यथा प्रकट करती है। नवम सर्ग में वनवास अवधि समाप्त हो जाने पर राम–लक्ष्मण एवं सीता घर के द्वार पर उपस्थित होते हैं।

इस प्रकार कवि ने सौमित्रिसुन्दरीचरितम् में केवल उन्हीं घटनाओं को लिया है, जिससे उर्मिला का चरित्र मुखर हो सके।

श्रीरामचरितम्– पं० रामविशाल त्रिपाठी

'श्रीरामचरितम्' के रचयिता पण्डित रामविशाल त्रिपाठी है। इसका प्रथम संस्करण 1970 में प्रकाशित हुआ।

श्रीरामचरितम् काव्य के कथानक में कवि ने रामकथा का आश्रम लिया है। इस काव्य का मुख्य स्रोत तो तुलसीदासकृत रामचरितमानस है किन्तु वाल्मीकि रामायण को भी कवि ने आधार माना है। अतः कवि ने काव्य को रूचिकर और संक्षिप्त करने के लिए कहीं–कहीं परिवर्तन कर दिये हैं। कवि ने श्रीरामचरितम् को सात काण्डों में विभक्त किया है। प्रथम, बालकाण्ड की कथा चार विरामों में वर्णित है। इसके प्रारम्भ में कवि ने इष्ट स्तुति एवं ग्रन्थ महात्म्य को बताया हैं तत्पश्चात् रघुवंश वर्णन करते हुए राम–जन्म से लेकर राम–सीता विवाह तक की कथा वर्णित है। अयोध्याकाण्ड में रामराज्याभिषेक की तैयारी के पश्चात् राम वनगमन से लेकर भरत का राम की चरण पादुका लेकर नन्दी ग्राम में निवास करने तक की कथा वर्णित है।

अरण्यकाण्ड में राम की वनवास अवधि के समय पंचवटी मगन से लेकर खर, मारीच आदि राक्षसों के वध तथा सीता हरण के पश्चात् पम्पा सरोवर तक जाने की कथा वर्णित है। किष्किन्धाकाण्ड की कथा तीन विरामों में विभक्त है इसमें कवि ने राम–लक्ष्मण की ऋष्यमूक वन में हनुमान्–सुग्रीव की मित्रता से लेकर हनुमान् को सीता का पता लगाने तक की कथा का वर्णन किया है। सुन्दरकाण्ड में हनुमान के लंका प्रस्थान की तैयारी से लेकर समुद्र से प्रार्थना किये जाने पर भयभत समुद्र द्वारा समुद्र बन्धन के उपाय राम को बताये जाने का वर्णन है। तदन्तर लंकाकाण्ड में सेतुबन्ध के लिये रामेश्वर की स्थापना से लेकर राम–रावण युद्ध, रावण का वध और

विभीषण का राज्याभिषेक, सीता की अग्निपरीक्षा के पश्चात् सभी वानरों सहित अयोध्या पहुँचने से लेकर रामराज्य की व्यवस्था और रामचरित–महात्म्य तक की कथा वर्णित है।

इस प्रकार 'श्रीरामचरितम्' काव्य के रचयिता का मुख्य उद्देश्य रामचरित से सम्बद्ध कथा को सरल भाषा में व्यक्त करना रहा है।

रामचरितम्– श्रीपद्मनारायण त्रिपाठी'

रामचरितम् महाकाव्य के रचयिता श्री पद्मनारायण त्रिपाठी हैं। 'रामचरितम्' महाकाव्य के पूर्व भाग का प्रकाशन 1965 ई० तथा उत्तर भाग का 1971 ई० में प्रथम संस्करण के रूप में हुआ। रामचरित महाकाव्य दो भागों में विभक्त है। पूर्व भाग में दस सर्ग हैं और उत्तर भाग में बारह सर्ग है। कुल बाईस सर्गों की इस कथा में राम के जन्म से लेकर रावण–वध करने के उपरान्त अयोध्या आगमन पर राम के राज्याभिषेक तक की कथा इस महाकाव्य में वर्णित है। जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, इसमें राम के चरित का ही वर्णन किया गया है, जिसके विषय में लिखा गया है–"अस्मिन् संस्कृतकाव्ये आधुनिकतायाः वैशिष्ट्यं दृश्यते। कथा वस्तु रामायणस्यैव तथापि वर्णनशैली नवीनतमा अस्ति।।"

कवि ने काव्य का प्रारम्भ इष्टदेव की वन्दना से किया है–

महेश्वरं महादेवं देवनारायणं हरिम्।
प्रणम्य विदधे रामचरितं मंगलाश्रायम्।।

दूसरे सर्ग में राजा दशरथ के यहाँ विश्वामित्र आगमन और उनके साथ राम–लक्ष्मण का जाना तथा राम द्वारा ताड़की राक्षसी का संहार की कथा वर्णित है। तीसरे सर्ग में राम–लक्ष्मण द्वारा मुनि विश्वामित्र के आश्रम में षड्ऋतुओं का आनन्द लिये जाने की कथा है। चौथे में, सुवाहु एवं मारीच वध के उपरान्त जनक के यहाँ धनुष यज्ञ में भाग लेने के लिए जाते समय मार्ग में राम द्वारा अहल्योद्धार तत्पश्चात् मिथिला नगरी में प्रवेश की कथा वर्णित है। पंचम सर्ग में विश्वामित्र जनक को राम–लक्ष्मण का परिचय कराते हैं। षष्ठ सर्ग में राम और सीता का प्रथम दर्शन प्रसंग वर्णित है। सप्तम और अष्टम सर्ग में जनक की प्रतिज्ञा तथा राजाओं द्वारा धनुष न उठाये जाने पर जनक की निराश वाणी को सुनकर लक्ष्मण का क्रोधित होना तदन्तर राम के द्वारा धनुष भंग हो जाने पर परशुराम का क्रोध और परशुराम और लक्ष्मण का संवाद वर्णित है। दशम सर्ग में राजा दशरथ के द्वारा राम का राज्याभिषेक का निर्णय करने के साथ ही पूर्ण भाग की कथा समाप्त हो जाती है।

एकादश सर्ग में कैकेयी के वरदानों के फलस्वरूप राम वन–गमन को तैयार हो जाते हैं। तथा साथ ही लक्ष्मण भी जाने को तैयार होते हैं। यह इस सर्ग का मुख्य प्रतिपाद्य है। द्वादश सर्ग में पंचदश सर्ग तक की कथा में राम वनगमन, राम का श्रृंग्वेरपुर पहुँचना तदन्तर वाल्मीकि आश्रम में जाना उनके द्वारा चित्रकूट का पता बताये जाने पर वहाँ अपना निवास स्थान बनाना, दशरथ मरण, भरत का ननिहाल से अयोध्या आगमन तथा पिता की अन्त्येष्टि आदि कार्य किया जाना वर्णित है।

षोडश सर्ग में भरत–राम को वापस लौटाने के लिए वन जाते हैं और भरत राम से मिलकर उनकी चरण पादुका लेकर वापस अयोध्या लौटते हैं। तत्पश्चात् शेष सर्गों से राम का पंचवटी निवास, शूर्पणखा प्रसंग,

खरदूषण–वध, मारीच वध, रावण द्वारा सीता का हरण, सीता–विलाप, रामशोक, शबरी प्रसंग, सुग्री मित्रता, बालि–वध, हनुमान् का लंका जाना एवं नल–नील द्वारा सेतुबन्ध तथा राम द्वारा रावण का वध की कथा वर्णित है।

कवि ने मूलतः वाल्मीकि–रामायण और तुलसीदास के रामचरितमानस को अपने सामने प्रस्तुत किया है, फिर भी कवि की सुरुचि और सौन्दर्यभावना ने अनेक प्रसंगों को जोड़–तोड़कर जिस आदर्श काव्य को प्रस्तुतस किया हैं वह अनेक विशेषताओं से युक्त है।

जानकीजीवनम्– अभिराजराजेन्द्र मिश्र

काव्य, नाट्य, कथा एवं समीक्षा–साहित्य की इस चतुष्टयी प्रवृत्ति को अपनी उत्कृष्ट रचनाधर्मिता से श्रीमण्डित वाले आचार्य अभिराजराजेन्द्र स्वातन्त्रयोत्तर संस्कृत रचनाकारों में मूर्धाभिषक्त माने जाते हैं। कवि मिश्र का जन्म उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल जनपद जौनपुर में स्यन्दिका के तटवर्ती द्रोणीपुर नाम गाँव में 2 जनवरी सन् 1943 ई० को हुआ। इनकी माता का नाम अभिराजी देवी तथा पिता का नाम पं० दुर्गा प्रसाद मिश्र था।

डॉ० राजेन्द्र मिश्र मूलतः कवि हैं। संस्कृत हिन्दी एवं भोजपुरी में इन्होनें अनेक रयचनाओं की रचना की–

1. महाकाव्य – जानकीजीवनम्, वामनावतरणम्।
2. खण्डकाव्य – आर्यान्योक्तिशतकम्, नवाष्टकमालिका, मृगांकदूतम्, पराम्बाशतकम्, शताब्दीकाव्यम्, चौरशतकम्।
3. नाटिका – प्रमद्वरा, विद्योत्तमा।
4. एकांकी संग्रह – नाट्यपंचगव्यम्, नाट्यपंचामृतम्, चतुष्पाथीयम्, रूपविशतिका, रूपरूद्रियम्।
5. गीत संग्रह – वाग्वघूटी, मद्वीका, श्रुतिम्भरा।
6. कथाग्रन्थ – अभिनवपंचतन्त्रम्, इक्षुगन्धा, राड़ा।
7. कोशकाव्य – अभिराजसप्तशती।
8. छनदशाला – छन्दोऽभिराजीयम्।
9. इतिहास ग्रन्थ – काव्यतरंगिणी, इण्डोनेशिया की भाषा में संस्कृत साहित्य का इतिहास।
10. अनुवाद – जावीरामाण का हिन्दी रूपान्तरण।

लगभग 500 से अधिक कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, रिपोर्ताज, यात्रा विवरण तथा शोध निबन्ध देश की विभिन्न मानक पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। उत्तर प्रदेश शासन द्वारा सन् 1972 से 1982 के बीच 8 बार पुरस्कृत किये गये।

बीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में (1977 ई०) महाकवि राजेन्द्र मिश्र द्वारा रचित 'जानकीजीवनम्' महाकाव्य 21 सर्गों एवं 692 श्लोकों में समाप्त होता है। अयोनिजा सीता की सम्प्राप्ति के पश्चात् कथा प्रारम्भ होती है, और उनके वधू बनकर अयोध्या के राजभवन में आने तक का उनका जीवनवृत्त जानकी की ऋज्वी जीवनधारा में मोड़ आना प्रारम्भ होते हैं। दशम सर्ग को कवि ने 'वनवास' नाम से सम्बोधित किया है। इसमें कैकेयी द्वारा राम के लिए वनवास की माँग प्रस्तुत करायी है। 'रावणापहार' नामक एकादश सर्ग में सीता की विपत्तियों का वर्णन

है। द्वादश सर्ग में कवि ने सीता को एक तपस्विनी के रूप में देखा है, जिसे 'अशोकवनाश्रय' नाम दिया है। त्रयोदश सर्ग में हनुमतप्राप्ति के कारण कवि ने इसका नाम हनुमत्प्राप्ति रख दिया है।

चतुदर्श सर्ग जिसे कवि ने 'लंकाविजय' का नाम दिया हैं, हनुमान् सीता अन्वेषण का सम्पूर्ण वृत्त रामचन्द्र जी को निवेदित करते हैं और तत्काल ही आदरपूर्वक वैदेही की चूड़ामणि उन्हें अर्पित करते हैं। इसी सर्ग में राम–रावण युद्ध, मातुलि द्वारा अमोध आग्नेयास्त्र चलाने के लिए श्रीराम को प्रेरित किया जाना और अन्त में युद्ध में राम द्वारा रावण का मारा जाना वर्णित है। पन्चदश सर्ग में सीता की अग्नि परीक्षा के पूर्व में सर्ग निश्चय ही कवि के कवित्त्व के नाना पक्षों को, जिनमें भावपक्ष और कलापक्ष को सम्मिलत किया जा सकता है। बड़ी सफलता से उजागर करते हैं।

रावरण पर विजय के पश्चात् अशोक वाटिका से सीता को राम के निकट उनके निर्देश से लाया जाता है। वह शिबिका पर सवार होकर आती है और विभीषण से अनुगत होकर राम के सामने प्रस्तुत होती है। वह अपने मन में एक ही साथ अनेक भावोवेगों से आन्दोलित हो रही है, तभी राम के मुख से अचानक, परुष अक्षर निकल पड़ता है। सीते! तुम रावण के संस्पर्श से मलिन हो तथा उसकी कामुक दृष्टि से देखी गयी हो, बहुत काल तक उसके भवन में रह चुकी हो, इन कारणों से मुझमें तुम्हे स्वीकार करने का साहस नहीं है।

राम का सीता के प्रति यह वक्तव्य कुछ अस्वाभाविक लगता है यदि ऐसा ही करना था तो सीता को बीच सभी में बुलाया ही क्यों? अपना यह सन्देश किसी दूत के माध्यम से भेज देते। राम के इस व्यवहार के बाद सीता द्वारा जो भाषण कराया गया है, राम की आलोचना की गयी है। वह बहुत ही विस्मयापद नहीं लगता, जब सीता कहती है– स्वामी! मैंने भी आज यह बात जान ली कि न अप मेरे पति (रक्षक) हैं और न मैं आपकी वल्लभा। षोडश सर्ग में रामचन्द्रजी का राज्याभिषेक वर्णित है इसीलिए कवि ने इस सर्ग का नाम 'राज्याभिषेक' रखा है। सप्तदश सर्ग का नाम 'जनापवादः तथा अष्टादश सर्ग का नाम 'अपवादनिर्णयः' है। उन्नीसवें सर्ग में लव–कुश के जन्म का वर्णन होने से 'लवकुशोदयः' कहा गया। विंश सर्ग में अश्वमेघ यज्ञ का वर्णन किया गया है।

सन्दर्भ–

1.विंशशताब्दी संस्कृत ग्रन्थ सूची पत्रम्, अभिराजराजेन्द्र मिश्र, पृ० 26

2.आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास– बलदेव उपाध्याय, पृ० 44

3.थाइदेश्यास्ततः पूर्व नैवाजानन् मनागपि

4.सौमित्रिसुन्दरीचरितम्

5.स्वातंत्रयोत्तर युग में संस्कृत रामकाव्य, डॉ० प्रतिमा शास्त्री, पृ० 120

6.स्वातंत्रयोत्तर युग में संस्कृत रामकाव्य, डॉ० प्रतिमा शास्त्री, पृ० 205

7.रामचरित, संपादकीय।

8.रामचरितम्, प्रथम सर्ग, मंगलाचरण।

9.प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठीः संस्कृत साहित्यः बीसवीं शताब्दी, पृ॒148

10.आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास, श्री बलदेव उपाध्याय